॥ कलेश्वरी धाम ॥

माँ कलेश्वरी

सामैयुं - 2026

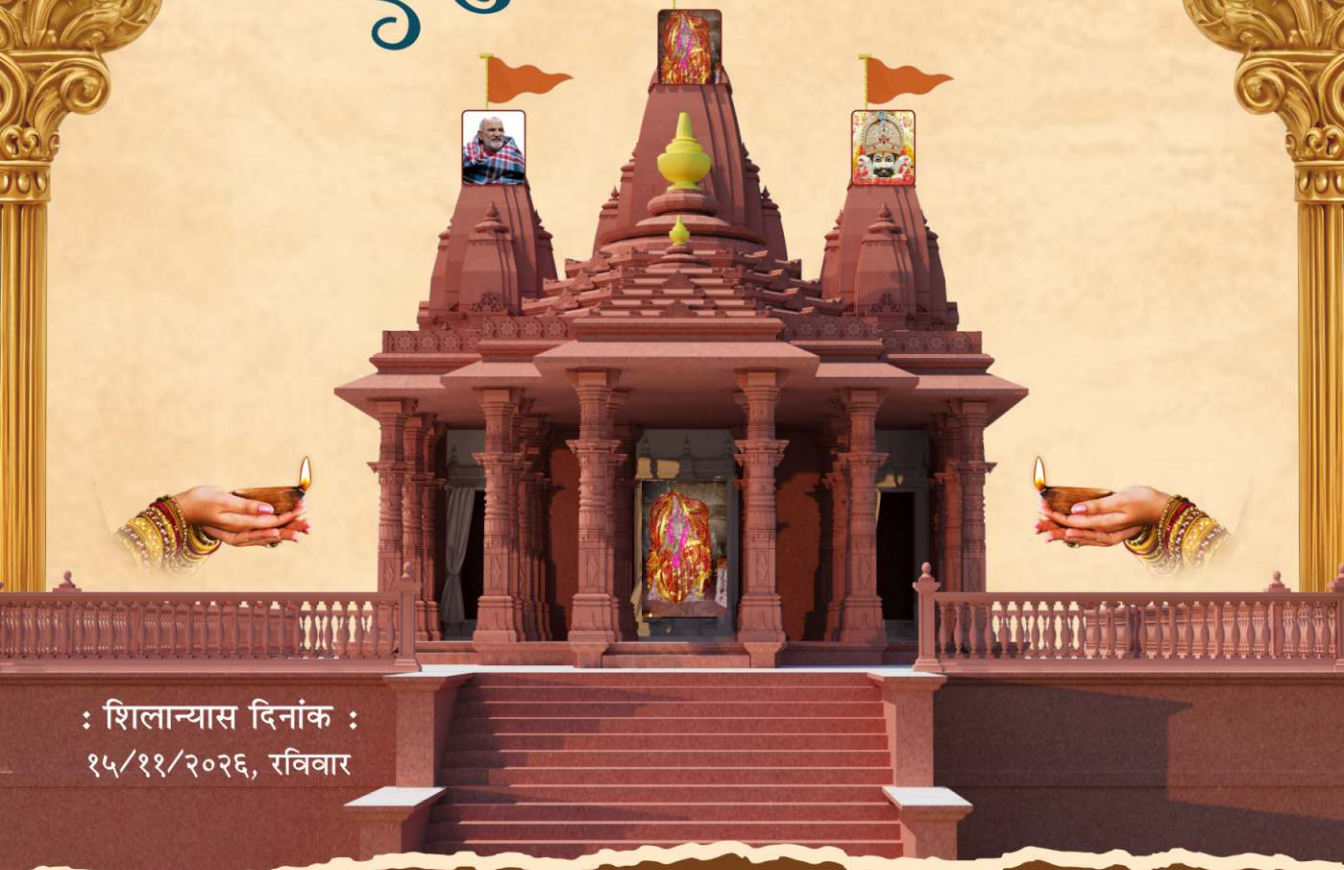

: शिलान्यास दिनांक :
१५/११/२०२६, रविवार

श्री कलेश्वरी माँ, श्यामजी, नीम करोली बाबा सेवा ट्रस्ट

रजी. नं. ए/३५७/महिसागर

गुरुकृपा ही केवलम्...

नीम करोली बाबा (१९००-१९७३) एक महान भारतीय संत और आध्यात्मिक गुरु थे, जिन्हे उनके अनुयायियों द्वारा '' महाराज-जी '' के नाम से पुकारा जाता था । उनका जीवन और शिक्षाएं आज भी लाखों लोगों की प्रेरित करती है।

प्रारंभिक जीवन

नीम करोली बाबा का जन्म १९०० में उत्तर प्रदेश के अकबरपुर में हुआ था । उनका बचपन का नाम लक्ष्मीनारायण था ।

आध्यात्मिक यात्रा

लक्ष्मीनारायण ने अपनी आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत एक युवा के रुप में की । वह विभिन्न संतो और गुरुओ से मिले और उनकी शिक्षाओं का अध्ययन किया । उन्होने विभिन्न तीर्थ स्थलों की यात्रा भी की ।

नीम करोली बाबा के नाम से प्रसिद्धि

एक दिन, लक्ष्मीनारायण ने नीम करोली में एक पेड के नीचे ध्यान लगाना शुरु किया । वहां उन्हें एक स्थानीय व्यक्ति ने देखा और उन्हें '' नीम करोली बाबा '' के नाम से पुकारना शुरु किया । यह नाम जल्द ही प्रसिद्ध हो गया ।

शिक्षाएं और दर्शन

नीम करोली बाबा की शिक्षाएं प्रेम, करुणा, और आत्म-साक्षरता पर केंद्रित थी । वह अपने अनुयायियों को यह समझाने की कोशिश करते थे कि जीवन का उदेश्य आत्म-ज्ञान और परमात्मा के साथ एकता प्राप्त करना है ।

महाराज जी की कृपा

नीम करोली बाबा की अनुयायी उन्हें '' महाराज-जी '' के नाम से पुकारते थे । वह अपने अनुयायियों को आशीर्वाद और कृपा प्रदान करने के लिए जाने जाते थे ।

बाबा नीम करोली का समाधि स्थल नैनीताल के पास पंतनगर में है । उनके भक्तों में एप्पल के मालिक स्टीव जोब्स, फेसबुक के मालिक मार्क जुकरबर्क और होलीवुड एक्ट्रेस जूलिया रॉबर्ट्स, महान बेटधर विराट कोहली शामिल हैं

मृत्यु और विरासत

नीम करोली बाबा का निधन ११ सितंबर १९७३ को हुआ था । उनकी मृत्यु के बाद उनके अनुयायियों ने उनकी शिक्षाओं को फैलाने के लिए कई आश्रम और संगठन स्थापित किए । आज, नीम करोली बाबा की शिक्षाएं और दर्शन पूरे विश्व में प्रसिद्ध है ।

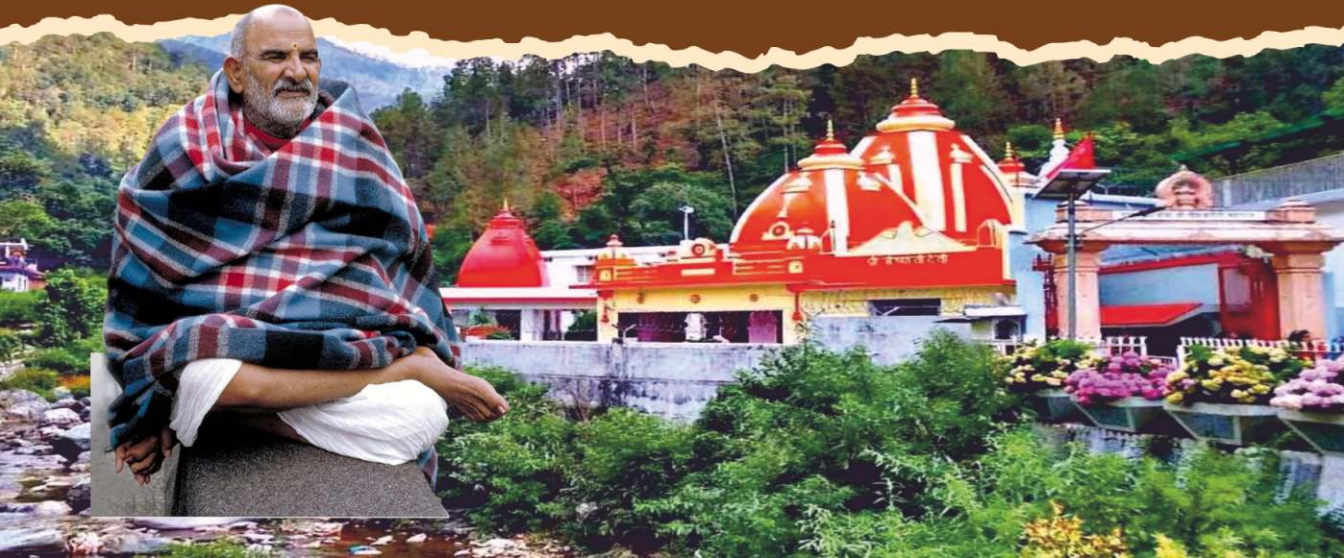

कुल की रक्षणहार
कुक्ष (कुख) की रक्षणहार
कलेश को हरनारी
जीवनकलश को आशीर्वाद रुप अमृतजल से भरनेवाली...

माँ कलेश्वरी

॥ कलेश्वरी धाम ॥

हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च ।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्
कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी ॥

दुर्गा कवच – दुर्गा सप्तशती पाठ

कुक्ष और कुल की रक्षणहार होने के कारण, कई युगों से भक्तजन यहाँ पुत्र वरदान पाने हेतु मंगल, गुरु और रविवार के दिन आते है खास कर एकादशी और पूनम को माँ कलेश्वरी की अनुकंपा पूर्ण प्रफुल्लित होती है । तो उस दिन दूर सुदूर से भक्तजन प्रार्थना-यज्ञ-हवन आदि के लिए विशेष रुप से आते हैं ।

पर्वतीय शृंखलाओं से बहती भादर नदी के तट पर, अपार प्राकृतिक सौंदर्य, वन से हराभरा, प्राचीन पुरातत्त्वीय शिल्पों और स्थापत्यों का अनेरा सौंदर्यधाम है यह 'माँ कलेश्वरी मंदिर परिसर' । माँ कलेश्वरी मध्य गुजरात के चरोतरीय लेउआ पाटीदार, चरोतरीय दरजी तथा गरासीया रावल की कुलदेवी है, और हमारे संशोधन में हमने यह पाया है कि, महाराष्ट्र के जलगाँव और आसपास के गुर्जर, महाजन, चौधरी, पाटील, जैसी मराठी प्रजाति की भी, माँ कलेश्वरी ही कुलदेवी है । और ऐसे ही पूरे भारतवर्ष में माँ के भक्तजन स्थित है । खास कर के भारत में कुछ राज्य तेलगांणा, कर्णाटक, आंध्रप्रदेश, झारखंड और तमिलनाडु के कई लोगों की माँ कलेश्वरी से कुलदेवी के रुप में श्रद्धा जुडी हुई है और यहाँ 'हिडिम्बा वन' के बहोत सारे लोग 'मनोवांछित पुत्र रत्न' की प्राप्ति के लिए माँ कलेश्वरी की आराधना करते हैं ।

श्याम पधारें ननिहाल...

युग युग से आतुर है हम....
खाटुं श्याम बाबा,
आपके आगमन को....

श्याम बाबा, खाटुं श्याम बाबा, कलियुग के राजा, हारे का सहारा, तीन बाणों के धारी

यह महिसागर वन-उपवन 'हिडिम्बा वन' से प्रसिद्ध है । यहीं बर्बरीक (खाटु श्यामजी) का ननिहाल है । महाभारत की कथानुसार पांडवो के वनवास काल में पांडवो के मजले भैया भीम का हिडिम्बा के साथ प्रेम विवाह इसी धरती पर हुआ और उनका पुत्र घटोत्कच जन्मा और इस कथा के प्रमाण हमें यही पर कलेश्वरी माँ के मंदिर परिसर की पर्वतीय शृंखला में मिलते हैं । घटोत्कच का विवाह अहीलवती से हुआ और उनका पुत्र बर्बरीक जो कि; परम बलवान, महात्मा, परम तपस्वी और मोक्षपंथी थे । बर्बरीक ने यहाँ महिसागर तट पर कठोर तपश्चर्या से माँ दुर्गा और माँ सिद्धिदात्री से 'अजेय' वरदान पाया और क्षण में युद्ध समाप्त करनेवाले तीन शक्तिशाली बाणों की प्राप्ति की ।

जन्म से दादीमाँ हिडिम्बा द्वारा पाले जानेवाले बर्बरीक (**બળીયાદેવ**) भगवान वासुदेव के परम भक्त थे और मोक्ष के इच्छुक थे । वे महाभारत युद्ध से पूर्व अपना शीर्ष वासुदेव को समर्पित कर अजर-अमर बन गये । स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने वरदान दिया की बर्बरीक तुम कलीयुग में मेरे नाम से अर्थात् 'श्याम' नाम से पूजे जाओगे, तुम कलियुग के राजा कहलाओगे और तुम्हारी चौखट से कोई खाली हाथ नहीं लौटेगा और अगर कोई तुम्हारी चौखट पर आ गया; तो जिसके भाग्य में मैंने भी अगर दु:ख लिखा होगा तो भी उसे तुम बदल शकोगे । तुम चाहो तो तुम्हारे भक्त का 'भाग्य परिवर्तन' कर पाओगे ।

ऐसे ही हमारे 'श्यामबाबा' का यह मंदिर हम सब के दु:खों को हर के हमारे 'हिडिम्बा प्रदेश' का कल्याण करेगा । आओ तीन बाणों के धारी, हारे के सहारे हमारे 'श्यामबाबा' की भक्ति से समृद्धि पायें ।

प्रस्तुत "त्रिमंदिर" परिसर में....

▪ माँ कलेश्वरी मंदिर ▪ खाटु श्याम बाबा मंदिर ▪ श्री निम करौली बाबा मंदिर

धर्मशाला कलेश्वरी धाम

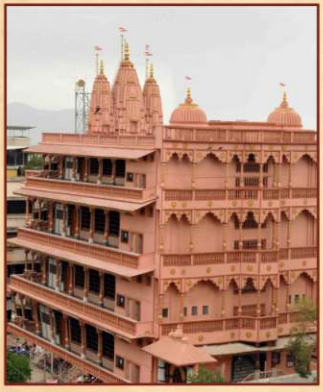

- विशाल धर्मशाला
- १० स्पेश्यल रुम
- ३० पुरुष + ३० महिलाओ का अलग अलग डोरमेट्री सुविधा
- संपूर्ण शाकाहारी भोजन व्यवस्था
- ध्यानकक्ष
- कार्यालय
- मीटींग होल

SURAT

15-16, Safetime House, RJD Textile Park,
Nr. Ichhapore Canal, Adajan Hazira Road,
Surat, Gujarat-394510
Mo. 98790 71691, 93777 19019

LAVANA

KRDF Campus, At Lavana Kaleshwari
Lunawala-Modasa Road, At Babaliya Chowkdi,
Ta. Khanpur Dist. Mahisagar-389 232

www.kaleshwari.org. E-mail: krdffoundation@gmail.com I krdf2015@gmail.com

११००० दीपों की महा आरती

:: दिनांक ::
सायं ०५:१५ बजे से
१५/११/२०२६, रविवार

आइये प्रगटायें....

दीप.... दिलों के....
दीप.... खुशियों के....
दीप.... प्रार्थनाओं के....
दीप.... हरीयालि के....
दीप.... ज्ञान और विद्या के....
दीप.... प्रगति और प्रकाश के....
दीप.... माता पिता के....
दीप.... माँ की ''महाआरती के''....

महा आरती

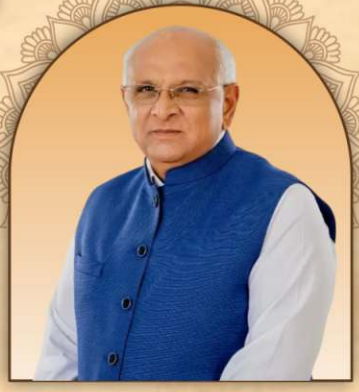

माननीय मुख्यमंत्रीश्री
(गुजरात राज्य)
श्री भुपेन्द्रभाई पटेल